ॐ

27-1-2011

Date

गंगा का अवतरण

सभी पुण्यआत्माओ को मेरा नमस्कार - - -

हे, गुरुदेव, आज आपकी कृपा से ध्यान मे उस "कैलास पर्वत" के दर्शन हो गये। उसके आपने केवल दर्शन ही नही कराये उस कैलास के उच्च शिखर तक पहुचाया है। इस उच्च शिखर पर पहुच कर अब जिवन मे बाकी कुछ नही रह गया है। अब सब कुछ छुटता जा रहा है। इतनी उंचाई पर पहुचने पर देखना भी चाहु तो भी कुछ नही दिख रहा है। लेकीन जहाँ से मै चला था वहाँ की यादे है। वे लोग है। जो साथ रहे थे। उनका अज्ञान है। जिसमे वे अटके है।

यहाँ कैलास पर पहुच कर भी मै अपने साथ उन सभी साधको को लाया हु। उनके बीना अब मेरा भी कोई अस्तीत्व नही है। मै उनके बीना अधुरा हु। वो जैसे भी है। मेरे है। अब या तो उन्हे यहाँ तक पहुचा या मुझे निचे ढकेल दे। ताकी मै उन तक पहुच सकु अब जो भी हो आपकी कृपा से हो आपकी करुणा से हो यही एक प्रार्थना है सब मेरे जैसे भाग्यवान नही होते जो इस कैलास पर्वत पर पहुच सके लेकीन उनके मन मे कैलास पर्वत पर पहुचने की इच्छा तो जाग्रत की जा सकती है, जब उनकी दिशा सही होगी तो एक दिन दशा भी सुधरेगी, जो प्रकृती के चक्र का ज्ञान मुझे दिया है, वह उन्हे भी प्रदान कर की प्रकृती का अपना एक चक्र होता है। और उस चक्र मे सभी प्राणीयो का सभी पशुपक्षीयो का सभी वनस्पतीयो का सभी वृक्षो का सभी मनुष्यो का समान महत्व होता है, सबका अपना एक स्थान है,

सभी को मिलाकर ही यह संतुलन होता है। इसमे से कोई भी कम या अधीक हो जाये तो वह असंतुलन निर्माण करेगा और यह असंतुलन प्राकृतीक विपदा को जन्म देगे।

"समर्पण ध्यान" ध्यान की वह पध्दती है, जो मनुष्य को इस प्रकृती के चक्र मे "समरस" होना सिखाती है, इसमे मनुष्य जैसे२ प्रगती करता है, इससे जिवन मे केवल शाश्वत बाते रह जाती है, और अशाश्वत बाते छुट जाती है। जन्म के साथ आयी बाते ही रह जाती है, और जन्म के बाद जोडी गयी बाते नाम, जाती, भाषा, धर्म, देश, रंग, सब छुट जाती है, और वह अपने आप को एक "आत्मा" मानने लगता है और यह मानना ही उसके जिवन मे "आध्यात्मीक क्रांती" लाता है, और यह अपने आप को "आत्मा" मानना धिरे२ शरीर का मोह से मुक्ती देता है, और यह मुक्ती ही "मोक्ष" है, जब शरीर छुटता है, तो शरीर के दोष भी छुटते है। शरीर की समस्याये छुटती है, शरीर की बिमारिया छुटती है, दुख: और सुख: छुटता है, और नियमीत सतत अपने आपको आत्मा मानने से अंत मे "मै" छुटता है, "मै" बडा ही सुक्ष्म है, वह जल्दी छुटता नही है, वह इधर से उधर होते रहता है, अपना रूप बदलते रहता है, "मै" छुट गया ऐसा आभास भी निर्माण करता है, लेकीन "मै" जल्दी छुटता नही है। सबके अंत मे छुटता है, वह छुटने से नही छुटता क्योकी वह एक "काली शाई" के समान है, वह कभी सफेद नही हो सकता है, वह तो केवल गुरूचरण की गंगा मे ही विलीन हो सकता है। हे गुरूदेव मेरे साधक बडे अच्छे है, बडे ज्ञानी है, बडे समर्थीत है, बस इस "मै" के साथ उनका समर्पण हो यही आपसे प्रार्थना है, क्योकी "मै" वह जिवाणु है, जो फिर शरीर मे सारी बीमारीया उत्पन्न कर सकता है।

जब तक मेरे साधक का "मैं" नही छुटता तब तक कोई मुक्ती नही है, क्योकी तब तक जो छुटा सा लगता है, वह सत्य नही है, केवल "आभास" मात्र है, मेरे साधक तेरे संन्देश सुनते सुनते बडे ज्ञानी हो गये है, सारा मोक्ष का ज्ञान उन्हे हो गया है, अब उन्हे किसी और ज्ञान को ग्रहण करने की आवश्यकता ही नही है।

बस हे परमात्मा तु उन्हे जिते जी "जगा दे।" क्योकी यह सपुर्ण ज्ञान उन्हे अगला जन्म लेने नही देगा इस लिये अब एक ही मार्ग है, की प्राप्त मोक्ष के ज्ञान का राहसाल होना और उसे "व्यवहार" मे लाना। जिवन के संग्राम मे तेरी कृपा से उन्हे शस्त्र भी दिये है, उन्हे शस्त्र चलाना भी आता है, लेकीन शस्त्र अपने पास है, इसका राहसाल ही नही है, बस गुरुदेव उन्हे उनके पास क्या है, क्या आपने उन्हे दिया है, उसका राहसाल करा दे, इतने मेहनतसे आपने भोजन तैयार किया है, जो भोजन किसी को देखने को भी नही मिलता वह भोजन साधकोकोतुने परोसा है, और मैंने उसके छोटे २ कौर बना कर उनके मुँह मे "निवाले" बनाकर खिलाया है, बस अब केवल उन्हे निगलना मात्र है, वह भी उनसे नही हो रहा वह मुँह मे "निवाला" रख कर इस नश्वर दुनीया को देख रहे है, यह दुनीया को देखकर उनका पेट नही भरेगा इस बात का ही राहसाल नही है, बस तु उन्हे राहसाल करादे की यह "निवाला" तुम्हे ही निगलना पडेगा यह काम केवल तुम ही कर सकते हो तभी तुम्हारा पेट भर सकता है, पेट भरने का यह एकमात्र उपाय है, बस गुरुदेव मेरे बच्चो को यह याद करा दे, मै जानता हु की यह अन्न रुपी चैतन्य का निवाला उन्हे मेहनत कर के नही मिला आसानी से नही मिला है, इस लिये उन्हे इसकी कद्र नही है।

लेकीन आप उन्हे उनका पुर्वजन्म याद कराईये। गत जन्मो मे उन्होने जो कार्य किये थे वह याद कराईये मेरा पिछले जन्मो मे क्या संबन्ध था वह याद कराईये। यह तो पुर्वजन्मो के "कर्मो" के कारण मीला है। पुर्व जन्म के "आश्वासन" के कारण मीला मैने जो पुर्वजन्म मे आश्वासन दिया था की जब परमात्मा की अनुभुती मुझे प्राप्त होगी मै वह देने आपके जिवन मे अवश्य आऊँगा ही, इस जनम तुम बीना अनुभुती के शरीर त्याग रहे हो, लेकीन अगले जन्म मे जब वह "अनुभुती का ज्ञान" मुझे प्राप्त होगा आपको वह दुगाँ ही यह अनुभुती ज्ञान का "निवाला" बडा दुर्लभ है, इस अनुभुती को पाने के लिये जन्मो जन्मो की साधना लगती है। प्रयत्न से तो वह कभी मील ही नही सकता एक जन्मभर साधना करो तो भी अनुभुती नही होती है। साक्षात परमात्मा की अनुभुती हो जाने के बाद फिर पाने के लिये अब रह ही क्या जाता है। यह ईश्वरीय अनुभुती उन्हे मिली है।

हे गुरुदेव उन्हे समझाईये ये उन्हे आसानी से नही मिला है, आसानी से मिला ऐसा लगता है, पर वास्तव मे ऐसा है, नही जन्मो जन्मो की तपस्या के बाद मिला है। और ऐसी "दिव्य अनुभुती" को पा कर भी वह उसे "आत्मसात" नही कर पा रहे है, उन्हे बस वह "निवाला" निगलना है, हे परमात्मा उन्हे व "दिव्य अनुभुती" का 'निवाला" निगलने की बुद्धी दे, बस और क्या अभी भी वह खोज रहे है, क्या खोज रहे है, पता नही अभी भी वह देख रहे है, क्या देख रहे है। पता नही अभी भी वे सोच रहे है, क्या सोच रहे है। पता नही, हे परमात्मा उनकी द्रष्टी को बदल, उनकी सोच को बदल उनके चित्त की दिशा को बदल हे ईश्वर अब या तो उन्हे उनका पुर्वजन्म याद करा या तो मुझे मेरा पुर्वजन्म भुला दे।

यह तेरा न्याय कैसा मुझे सब जन्म याद है, और वह केवल मुझसेहीकयो याद है, या तो मेरे साधको याद दिलादे या तो मुझे सब कुछ भुला दे। सब कुछ याद रख कर चलना बडा कठीन है,
सब जान कर अन्जान बनना बडा कठीन है, यह अन्जान बनने का नाटक मैं कब तक करु दससाल यह नाटक कर रहा हु, इस लिये उन्हे उनके पुर्व जन्म का एहसास करा दे ताकी ईश्वरीय अनुभुती का महत्व उनको हो जायेगा और यह सब करने मे तेरी कुछ मजबुरी हो तो एक कार्य कर मुझे यह सब कुछ भुला दे। यह तेरा न्याय कैसा "चकोर को याद है, चांद को नही" या तो दोनो को याद करा दे या फीर दोनो को ही भुला दे, या तो मेरे साधको इस जगत के "मायाजाल" से बाहर निकाल या तो फीर उस मायाजा मे मुझे डाल दे। मैं कमसे कम उनके साथ तो रहुंगा या तो उनको "स्वर्ग के व्दार खोल या मुझे नर्क मे डाल दे,॥ मैं नर्क मे तो मेरे साधको के साथ रहुगा एक दिन हम वहा भी स्वर्ग का निर्माण कर लेंगे।
मैं सदैव उनके साथ उनके जैसा रहने का उनके स्तर पर रहने का उन्हे समझे ऐसी बाते करने का प्रयास करते रहताहु, क्या मैं ही उनके स्तर पर जाऊगाँ वह मेरे स्तर पर कभी आयेंगे ही नही मैं निचले स्तर पर जा जा कर अब थक गया हु, या तो उनका स्तर उठा दे या मेरा स्तर गिरा दे ये बार² उपर निचे जा कर मैं थक गया हु। हे परमात्मा तु एक एक साधक की मुझे संपुर्ण जानकारी देता है, सारा पुर्वजन्म का लेखाजोखा बताया है, इतना सब कुछ जब एक क्षण मे करता है, तो मेरे साधक को जिवन भर मे भी एहसास नही कराता वह कौन है, और किन जन्मो मे से वह आया है, और मेरा और उसका क्या संबन्ध है,

सारे जन्मो जन्मो के संबन्ध क्या मैं ही याद रखु। उसे एक जन्म का तो याद कराऐ मुझे तो उसके आठ जन्मो का हिसाब बताया है, जब तु उसे एक जन्म का याद नही करा सकता तो मुझे क्यो उसके आठ जन्मो का हिसाब बताते रहता है या तो उसे कमसेकम एक जन्म का तो भी याद करा दे या फीर मुझे उनके पुर्व जन्मो का बताना छोड दे, यह तेरा एक तरफा "प्यार" अब मुझे सहन नही होगा है, गुरुदेव कीतना कठीण है, ऐसे वातावरण मे रहनाकी आप उसके आठ जन्मो ~~जन्मो~~ को जानते है, और सामने वाला है, की वह आप को भी पहचानता नही हो इस लीये अब या तो उन्हे याद करा दे या मुझे भुला दे, मुझे इस समाज मे आये सालो हो गये लेकीन अभी भी मैं यहाँ के वातावरण से "समरस" नही हो पा रहा हु, प्रत्येक क्षण बस यही चलते रहता है, गुरुदेव प्रत्येक आत्मा गलती को दोहराती क्यो है, एक जन्म मे जो गल्ती की वही गल्ती वह दुसरे जन्म मे भी फीर दोहराती क्यो है, बार २ आत्मा उसी चक्र पर आकर क्यो अटक जाती है, प्रायः देख रहा जो साधक पिछले जन्म मे जो गलती करता है, वही गलती वह फीर दोहराता है, जब की मै वह जानता हु, उसे उस दोष से सतर्क भी करता हु, लेकीन वह उस सतर्कता को गंभीरता से नही लेता है, और वही गल्ती वह फीर करता है, क्या पुर्व जन्म का प्रभाव इस जन्म पर भी उतना ही होता है, और जब यह बुरा भाव होता है, तो साथ २ अच्छा भाव क्यो नही उसे अच्छी भी बाते याद करवा जिन अच्छी बातो से उसे इस जन्म मे यह दिव्य अनुभुती प्राप्त हुयी है, दिन प्रतिदिन समय बितता जा रहा है, और मेरे और साधक मे अन्तर बढ रहा है, मेरे साधक मेरे साथ नही चल पा रहे है, यह मैं समझ पा रहा हु, लेकीन साधक नही समझ पा रहे है।

इस लिये आपकी कृपा उन पर हो और उनकी गती बढे, यही आपके चरणो मे प्रार्थना है। और वह संभव न हो तो मेरी गती ही कम कर दे।
अब इस "गहन ध्यान अनुष्ठान" मे ही देखो प्रत्येक दिन "सुर्योदय" के साथ एक "चैतन्य की गंगा" का अवतरण हो रहा है, और "मंगल मुर्ती" मे प्रतिदिन "चैतन्य का अभीषेक" हो रहा और सारा "आश्रम का परिसर" उससे प्रभावीत हो रहा है। मुझे उस चैतन्य मे शाम कब हो गयी इसका पता भी नही चल रहा है, रोज सुर्योदय के साथ बहने वाली चैतन्य गंगा मे स्नान करने के लिये देश विदेश से अनेको पक्षी भी आ रहे है। इस चैतन्य के गंगा अवतरण का ज्ञान मुझे है, इन पक्षीयो को भी है। लेकीन मेरे साधको को क्यो नही है, क्यो नही उन्हे याद आता की उनके जिवन काल मे "मंगल मुर्ती" की प्राण प्रतीष्ठा की जा रही है, उस मंगल मुर्ती की प्राण प्रतीष्ठा की जा रही है, जो मुर्ती भवीष्य मे युगो युगो तक रहेगी भवीष्य मे इस स्थापीत प्राणशकती से करोडो आत्मारे भी लाभान्वीत होगी ऐसी मंगलमुर्ती मे प्राण डाले जा रहे है, यह बात पक्षी भी जान रहे है, पक्षी बिचारे कीतने दुर दुर से सफर कर के आ रहे है। और आये है पक्षीयो की भी दिनचर्या है, उन्हे भी पेट है, उन्हे भी परिवार है, वे रोज इस चैतन्य की गंगा मे स्नान कर रहे है, तो मेरे साधक क्यो नही क्या साधक इन पक्षीयो से भी गये बीते है। पक्षी भी प्रसन्न है, की ये घटना उनके जिवन काल मे हो रही है, वे उस घटना का साक्षी हो रहे है, और रोज सुबह उनकी संख्या बढ रही है, पडोस के समुद्र के लहरो पर भी चैतन्य का प्रभाव नजर आ रहा है, उसकी लहरे भी उंची उठ रही है। मानो वे भी मंगल मुर्ती का "अभीषेक" करना चाह रही हो। सारे आश्रम का वातावरण ही "चैतन्य युक्त" हो गया है।

हे परमेश्वर जब तु इन पक्षीयो को बुद्धी दे सकता है, इन पक्षीयो को यहाँ आने की प्रेरणा दे सकता है, यह युगो युगो तक चैतन्य बहाने वाली "मंगलमुर्ती" के प्राण प्रतीष्ठा का महत्व समझा सकता है, तो थोडी कृपा मेरे साधको को भी कर और उन्हे भी प्रेरणा दे। की वह यहाँ "एक सुबह" तो भी आये और इतनी युगो युगो तक चलने वाली चैतन्य की प्रक्रीया के साक्षी बने।

"सुर्योदय" के साथ बरसने वाले गंगा के अवतरण मे वे भी स्नान करे और अपने जिवन को कृतार्थ करे ऐसी गुरुदेव उन्हे भी बुद्धी दे, आप क्या नही कर सकते आप पक्षीयो को बुद्धी दे सकते है, तो साधको को क्यो नही थोडी कृपा उन पर भी किजीये, क्या घटना उनके जिवनकाल मे घट रही है, केवल उसका एहसास उन्हे कर दिजीये, युगो युगो तक चैतन्य प्रदान कर सके इतनी प्राणशकती इन "मंगलमुर्ती" मे डाली जा रही है, यह प्रक्रीया का अनुभव मेरे लिये भी अनोखा है, बडे सुखद अनुभव को जिवन मे महसुस कर रहा हुं, मै अपने को तो कैलाश पर्वत के उच्च शिखर बैठा पा रहा हुं, पर मेरे बच्चे अभी निचे है, उन्हे कैलाश पर्वत पर आप बैठा नही सकते तो कम से कम "कैलास के दर्शन" करने की प्रेरणा तो उन्हे दिजीये बस आपके चरणकमल पर यही एक प्रार्थना है।

आपका
बाबास्वामी
27/1/2011